

## काम

### सत्र 23: उपसंहार, अय्यूब 42

#### जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 23, उपसंहार कार्य 42 है।

#### उपसंहार का परिचय [00:23-2:04]

तो, हम अंततः उपसंहार, गद्य भाग पर पहुँच गए हैं जो पुस्तक को समाप्त करता है। यह 42:7 में शुरू होता है। एक तरह से सारे भाषण खत्म हो गए हैं। तो, अब हम कुछ ढीले सिरे जोड़ रहे हैं। लेकिन वास्तव में ये ढीले सिरे ही हैं जिन्होंने बहुत से लोगों के लिए भ्रम पैदा कर दिया है। उपसंहार को पुस्तक का समापन संदेश देने के रूप में देखना आसान है, लेकिन ऐसा नहीं है। यह केवल एक ढीले सिरे को बांधना है। आइए इस पर एक नजर डालें।

श्लोक सात से नौ में, हमें अय्यूब के मित्रों की फटकार और मेल-मिलाप मिलता है। परमेश्वर ने एलीपज से, जो प्रत्यक्षतः उस दल का प्रवक्ता था, कहा, मैं तुझ से और तेरे दोनों मित्रों से क्रोधित हूँ, क्योंकि तुम ने मेरे विषय में सच नहीं कहा, जैसा कि मेरे दास अय्यूब ने कहा है। इसलिये अब सात बैल और सात मेढ़े ले कर मेरे पास जाओ। दास अय्यूब और अपने लिये होमबलि चढ़ाओ। मेरा दास अय्यूब तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा, और मैं उसकी प्रार्थना स्वीकार करूँगा, और तुम्हारी मूर्खता के अनुसार तुम्हारे साथ व्यवहार नहीं करूँगा। तुम ने मेरे विषय में मेरे दास अय्यूब की नाई सच नहीं कहा है।

अब ध्यान दें, सबसे पहले, कि ये तीन दोस्त हैं, एलीहू नहीं। इस फटकार में एलीहू शामिल नहीं है। ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि वह किताब में बाद में जोड़ा गया था। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने ईश्वर के बारे में सही बात कही है। और इसलिए, वह इस फटकार में शामिल नहीं है।

#### अनुवाद मुद्दा: "मेरे लिए सत्य जैसा..." नहीं "मेरे बारे में" 2:04-3:18]

लेकिन अब तक हमें यहां अनुवाद में कठिनाई का सामना करना पड़ा है, नौकरी की किताब में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। एनआईवी "मेरे बारे में सच" बोलने की बात करता है। और मैंने बस उस भाषा का उपयोग किया क्योंकि अनुवाद में यही है। "सत्य" शब्द *नेकोनाह* शब्द है। हिब्रू में

नेकोनाह इंंगित करता है कि कुछ तार्किक, समझदार और सत्यापन योग्य है। तो, यह सत्य के विचार का तार्किक, समझदार और सत्यापन योग्य व्यवहार है। लेकिन हमें जिस चीज़ पर ध्यान देना है वह इस क्रिया और इसके बाद आने वाले पूर्वसर्ग का संयोजन है। एनआईवी ने उस पूर्वसर्ग का अनुवाद "के बारे में" किया। तो "आपने मेरे बारे में बात की है।" समस्या यह है कि पूरे पुराने नियम में लगातार इस क्रिया और पूर्वसर्ग के संयोजन का अर्थ है "किसी ऐसे व्यक्ति से बात करना जो आम तौर पर मौजूद है।" यह "उनके बारे में" नहीं बोल रहा है। यह "उनसे" बात कर रहा है।

### **संवादों के लिए नहीं बल्कि उपसंहार वक्तव्यों के लिए ईश्वरीय स्वीकृति [3:18-5:17]**

अब इससे कुछ समस्याएँ पैदा होती हैं। हम देख सकते हैं कि अनुवादक एक अलग दिशा में क्यों चले गए हैं क्योंकि इसका यहां क्या मतलब है? सबसे पहले, यह संदर्भित करता है कि अय्यूब ने अपने पिछले भाषण में, अध्याय 42 के एक से छह तक श्लोकों में परमेश्वर से क्या बात की थी। वह अब है; अय्यूब ने वही कहा है जो ठीक है। उसने भगवान से बात की है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि अय्यूब ने पूरी किताब में जो कुछ भी कहा है वह सही या सत्य नहीं है, या *नेकोनाह*। अय्यूब ने बहुत सी बातें गलत कही हैं। तो इससे मदद मिलती है क्योंकि अय्यूब ने अभी-अभी यहोवा से जो कहा है उसे ही स्वीकृति दी गई है, और यह उन बातों के विपरीत है जो उसने पूरी किताब में कही हैं। इसलिए, परमेश्वर ने यह घोषित नहीं किया है कि अय्यूब ने जो कुछ कहा वह सही है। बल्कि उसने अय्यूब की प्रतिक्रिया को स्वीकृति दी है और मित्रों को ताड़ना दी है। तुलनात्मक रूप से पश्चाताप न करने के कारण उनकी तुलना की जाती है और उन्हें दंडित किया जाता है। ऐसा नहीं है कि दोस्तों ने भगवान को गलत बात कही। उन्होंने भगवान से बिल्कुल भी बात नहीं की। ठीक है? तो, यह सभी संवादों के बारे में नहीं है, "तुमने वह नहीं कहा जो मेरे लिए सही है," भगवान एलीपज से कहते हैं, "जैसा कि मेरे सेवक अय्यूब ने कहा है।" वे चुप रहे हैं और अय्यूब की तरह कोई पश्चातापपूर्ण प्रतिक्रिया नहीं दी है। यह एक महत्वपूर्ण कथन है क्योंकि यह इस टिप्पणी को पुस्तक के इस अंतिम भाग पर केंद्रित करता है।

### **उपसंहार की अलंकारिक रणनीति: प्रतिशोध सिद्धांत की बहाली नहीं [5:17-8:22]**

अब, उपसंहार की अलंकारिक रणनीति, यह क्या कर रही है? लोगों ने इसे पुस्तक का वैध निष्कर्ष मानना समस्याग्रस्त माना है। यह लोगों के लिए वास्तविक समस्याएँ खड़ी करता है; आखिरकार, अय्यूब की समृद्धि बहाल करने से वह पीड़ा नहीं मिटती जो उसने अनुभव की थी। घोल के छल्ले खोखले होते हैं। यदि यह उत्तर है, तो भगवान इसे वापस देते हैं। इसमें खोखलापन महसूस होता है। अय्यूब को अधिक बच्चे उपलब्ध कराने से उन बच्चों का दुःख कम नहीं होता जिन्हें उसने खो दिया था।

इस बिंदु पर, मैं आपको याद दिला दूँ कि मैंने सुझाव दिया है कि पुस्तक एक विचार प्रयोग है। इसका मतलब यह नहीं है कि हमें उन बच्चों पर शोक मनाने वाली वास्तविक नौकरी की कल्पना करनी होगी जिन्हें भगवान ने छीन लिया है। यह सब विचार प्रयोग के दायरे में है। भगवान की समृद्धि को बहाल करना, मुझे खेद है, अय्यूब की समृद्धि को बहाल करना प्रतिशोध सिद्धांत की पुनर्स्थापना जैसा लगता है। इसका कोई मतलब क्यों है? ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर प्रतिशोध सिद्धांत की अपर्याप्तता स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। तो इसे वापस क्यों लाएं? ये कुछ समस्याएं हैं जो लोगों को पुस्तक के साथ हुई हैं। तो, आइये इसके बारे में सोचें। याद रखें कि पुस्तक का फोकस ईश्वर की नीतियां हैं। चुनौती देने वाले ने दावा किया था कि मुझे खेद है कि समृद्ध होने के लिए धर्मी लोगों को कष्ट सहना एक खराब नीति है। अय्यूब का दावा है कि धर्मी लोगों को कष्ट सहना एक खराब नीति है। पहले 27 अध्याय चैलेंजर के दावों का पता लगाते हैं, जिसमें अय्यूब ने अपना विश्वास बनाए रखा है कि धार्मिकता, समृद्धि नहीं, सबसे ज्यादा मायने रखती है। अय्यूब प्रदर्शित करता है कि धार्मिकता के लिए धर्मी होना संभव है। वह, सचमुच, बिना कुछ लिए परमेश्वर की सेवा करेगा। पुस्तक इसी तरह अय्यूब के दावे को संबोधित करती है और निष्कर्ष निकालती है कि धर्मी लोगों को समृद्ध करना ईश्वर की नीति नहीं है। निश्चित रूप से यह ईश्वर की नीति नहीं है। उपसंहार में अय्यूब की समृद्धि को बहाल करके, भगवान एक स्पष्ट बयान देता है कि वह पहले की तरह कार्य करना जारी रखेगा, और नीति अपरिवर्तित रहेगी। उनकी नीतियों के सामने चुनौतियां खड़ी हो गई हैं। और इसलिए, वह अपनी नीतियों को अपरिवर्तित बहाल करता है। चैलेंजर और जॉब द्वारा प्रस्तुत मामले अस्थिर साबित हुए हैं। ईश्वर प्रतिकार सिद्धांत से बंधा नहीं है।

## एक उपहार के रूप में समृद्धि [8:22-9:08]

अय्यूब अब अपनी समृद्धि के बारे में अलग ढंग से सोच सकता है। ऐसा कुछ नहीं जिसके लिए वह प्रतिशोध सिद्धांत के आधार पर हकदार है, जो कि दुनिया कैसे काम करती है इसकी नींव है। उसे अलग ढंग से सोचना होगा। समृद्धि कोई पुरस्कार नहीं है जो उसने अर्जित किया है या वह पुरस्कार नहीं है जिसे ईश्वर देने के लिए बाध्य है। वह जो भी समृद्धि अनुभव करता है वह ईश्वर का उपहार है, स्पष्ट और सरल। अय्यूब की समृद्धि की बहाली का उद्देश्य उसके दर्द को मिटाना नहीं है। यह प्राथमिक रूप से अय्यूब के लाभ के लिए भी नहीं है। पुनर्स्थापना का मुद्दा यह नहीं है। याद रखें, यह अय्यूब के बारे में नहीं है; यह भगवान के बारे में है। अय्यूब की नवीकृत समृद्धि के माध्यम से, भगवान की चुनौतीपूर्ण नीतियों को बहाल किया जाता है। धर्मी की समृद्धि कोई दी हुई नहीं है। यह यांत्रिक नहीं है। यह वह आधार नहीं है जिस पर ब्रह्मांड को व्यवस्थित किया गया है। यह ईश्वर का दायित्व नहीं है, बल्कि यह ईश्वर की प्रसन्नता है। उपसंहार यह सुझाव नहीं देता है कि जब हम पीड़ित होते हैं, तो हम भविष्य की संतुष्टि की उम्मीद के साथ खुद को सांत्वना दे सकते हैं - किसी दिन, हम सब कुछ वापस पा लेंगे। यह निश्चित रूप से किताब का सबक नहीं है।

हमारा उद्देश्य एक चरित्र के रूप में अय्यूब से सीखना या उसके अनुभवों से सीखना नहीं है। किताब हमें खुद को उसकी जगह पर रखने के लिए नहीं कहती है; यह हममें से कुछ लोगों के लिए काफी आसानी से आता है। यह हमें उसके व्यवहार के अनुसार अपनी प्रतिक्रियाएँ प्रस्तुत करने के लिए नहीं कहता है। हमें अय्यूब की तरह नहीं बनना चाहिए। इसके बजाय, पुस्तक हमें यह सीखने के लिए प्रेरित करती है कि ईश्वर के बारे में अधिक सटीकता से कैसे सोचा जाए, जैसे अय्यूब हमारे साथ सीखता है, ईश्वर के बारे में अधिक सटीकता से कैसे सोचा जाए। परमेश्वर उन लोगों पर कृपा दिखाने से प्रसन्न होता है जो उसके प्रति वफादार हैं। लेकिन दुनिया उस आधार पर काम करने के लिए बाध्य नहीं है।

## अय्यूब की समृद्धि और त्रिकोण की बहाली: बुद्धि, न्याय नहीं [9:08-14:39]

अय्यूब की समृद्धि की बहाली प्रतिशोध सिद्धांत की अयोग्य पुनर्स्थापना के बराबर नहीं है। अय्यूब के आशीर्वाद को अब एक अलग दृष्टि से देखा जाना चाहिए। न तो भगवान की नीतियां और न ही दुनिया के संचालन थियोडिसी के रूप में लागू प्रतिशोध सिद्धांत पर आधारित हैं।

तो, भगवान त्रिभुज पर कहाँ फिट बैठता है? याद रखें, हमने इस त्रिकोण के बारे में प्रतिशोध सिद्धांत और अय्यूब की धार्मिकता और भगवान के न्याय के बारे में बात की है और जहां हर कोई खुद को स्थित करता है और जहां उन्होंने अपना किला बनाया है, और वे क्या छोड़ने को तैयार हैं।

तो, भगवान त्रिभुज पर कहाँ फिट बैठता है? वह नहीं करता. भगवान त्रिकोण को अस्वीकार करते हैं. भगवान इसे टुकड़े-टुकड़े करके फेंक देते हैं। भगवान त्रिकोण का विचार नहीं खरीदते। वह ब्रह्मांड की व्यवस्था को समझने का मानवीय प्रयास था। ये उनके सरल समीकरण थे जो काम नहीं आए। इसलिये एलीहू भी गलत था; वह अब भी सोचता था कि न्याय ही बुनियाद है। उन्होंने अभी भी त्रिकोण में फिट होने की कोशिश की, भले ही उन्होंने इसे बढ़ाया और सतही उद्देश्यों पर काम किया। भगवान त्रिकोण में फिट नहीं बैठते. त्रिकोण अस्वीकृत है. हमारे पास दावों का त्रिकोण नहीं है. आधार न्याय नहीं है. आधार बुद्धि है.

जब घटनाएँ घटित होती दिखाई देती हैं, तो प्रतिशोध सिद्धांत के अनुसार, उन्हें केवल भगवान के चरित्र के तरंग प्रभावों के रूप में देखा जाना चाहिए क्योंकि वह अपनी बुद्धि में आशीर्वाद और न्याय लाने के लिए संलग्न है। यह हमें यह स्पष्टीकरण नहीं देता कि धर्मी लोग कष्ट क्यों सहते हैं। हमें अपनी अपेक्षाओं को अय्यूब के अनुभवों पर आधारित नहीं करना चाहिए। अय्यूब को अपनी पीड़ा के लिए कोई स्पष्टीकरण नहीं मिलता है, और पुस्तक पाठकों के लिए उस शून्य को नहीं भरती है जैसे कि हमें स्पष्टीकरण दिया जाना चाहिए। पुस्तक में दी गई एकमात्र व्याख्या ऐसी दुनिया में ईश्वर और उसकी नीतियों के बारे में सही सोच से संबंधित है जहां पीड़ा व्यापक और अपरिहार्य है। इसका सरोकार इसी से है।

तो फिर, उपसंहार पुस्तक का एकदम सही निष्कर्ष है। भगवान की नीतियों की चुनौतियों का समाधान किया गया है। ईश्वर और ब्रह्मांड के बारे में विभिन्न गलतफहमियाँ दूर हो गई हैं। हमें ज्ञान प्राप्त हुआ है. यह ज्ञान हमारे कष्टों को कम नहीं करता है, लेकिन यह हमें मूर्खतापूर्ण सोच से बचने

में मदद करता है जो हमें ईश्वर को अस्वीकार करने के लिए प्रेरित कर सकता है जब हमें वास्तव में उसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है। तो, उपसंहार पुस्तक का निष्कर्ष है, लेकिन इसमें पुस्तक का संदेश शामिल नहीं है। पुस्तक का संदेश ईश्वर की वाणी से निकला।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 23, उपसंहार, अय्यूब 42 है। [14:39]